# ।। क्रमी नर को अंग ।।

## मारवाडी + हिन्दी

*

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

## || अथ क्रमी नर को अंग लिखंते ||

|| कवत ||

**जळ पाहण घी कूप || झूट गुल आग न झेले ||**
**बाळक संग जवान || हैण नर सेज न खेले ||**
**बग तर छिवे न घाव || आंधळो चाव न देखे ||**
**लाडू किया अनेक || चाख लेत बिन पेखे ||**
**काळी ऊन न रंग चडे || लाखां करो ऊपाय ||**
**यूँ क्रमी नर सुखराम के || ग्यान भिदे नही आय || १ ||**

आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि कर्मी मनुष्य जिसके पहले के नरकीय कर्म है तथा और भी नरकीय कर्म कर रहा है ऐसे कर्मी मनुष्य के बारेमे कह रहे है । जैसे पत्थर पे पानी पडा या पत्थर पानी मे रहा तो भी पत्थर को पानी भेद नही सकता इसी तरह से कर्मी मनुष्य मे ज्ञान नही भेदता और कूपा घी रखने का बर्तन होता है उसे घी भेदता नही । और झूठा गुल याने चकमक पत्थर से निकली हुयी चिन्गारी से सेमल की रूई को आग पकडती । मतलब सेमल की रूई झूठी होगी तो आग नही पकडती है वैसे ही कर्मी मनुष्य ज्ञान धारण नही करता है । जैसे बालक के संग जवान और हिजडा स्त्री संग संसार का खेल,खेल नही सकता है वैसे ही कर्मी मनुष्य ज्ञान धारण नही कर सकता है । जैसे बखतर(कवच )पहन लेनेपर घाव नही लगता है वैसे ही नरकीय कर्मी मनुष्य को ज्ञान नही लगता है । जैसे अंधा मनुष्य आनंद देनेवाले चाव होने पे भी खेल नही देख सकता है वैसे ही कर्मी मनुष्य ज्ञान नही ले सकता । अनेक प्रकार के लड्डू बनाये परन्तु खाये बिना परख नही होगी । जैसे काले कम्बल के उपर दूसरा रंग नही चढ सकता है वैसे ही कर्मी मनुष्य को ज्ञान नही लगता है । लाखो उपाय किए,तो भी कर्मी मनुष्य को ज्ञान नही भेद सकता है । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । || १ ||

**आक ईख आदीत || आँख कारी यूँ कर्मी ||**
**ज्यूँ मर्कट सिर्पाव || अई पोपा कूं चिर्मी ||**
**सर्प दुध बिष होय || मरे खंर मिसरी खावे ||**
**चहूँ दिस सायर नीर || प्रेत प्यासो दुःख पावे ||**
**यूँ क्रम हीण के नही बणे || साध संगत को जोग ||**
**दाख फळया सुखराम के || हुवे काग के रोग || २ ||**

जैसे मदार पीने वाले मनुष्य को,मदार के जहर का नशा हो जाता है वैसा कर्मी जीव को भोग कर्म का नशा रहता है,उसे योग का ज्ञान अच्छा लगता नही । मोतीबिंदु ऑपरेटेड (oprated) मनुष्य सुरज के प्रकाश मे रह नही सकता ऐसा ही कर्मी जीव ज्ञान मे रह नही सकता । जैसे बन्दरको अच्छे कपडे पहनाये,तो भी वह बन्दर उसे नखो से,दातो से

फाडकर फेक देता है । इसी तरह से कर्मी मनुष्य ज्ञान को फेक देता है और मारवाड देश मे अरड पोपा नामक एक जाती के लोग है । उन्हे किसीने चिर्मी(गुंज)दिखला दिया तो वे अरड पोपा गाँव छोडकर भाग जाते है ऐसे ही कर्मी मनुष्य से कोई ज्ञान बतायेगा तो अरड पोपा के जैसे भाग जाते है । कोई यदी सर्प को दूध पिलाया,तो भी वह सर्प उस दूध का जहर बना देता है ऐसे ही कर्मी मनुष्य को ज्ञान बताने पर वह कर्मी मनुष्य अमृत रूपी ज्ञान को विष बना देता है । खडीशक्कर गधे को खिलाने पर वह गधा मर जाता है ऐसे ही कर्मी मनुष्य ज्ञान मे नुकसान समजता है । चारो ओर बडी–बडी नदीयाँ और तालाब पाणी से भरे है परन्तु प्रेत(भूत)को वह पानी न मिलने से,वह प्यासे हुए दु:खी रहते है । भूत प्रेत को नदीयो और तालाब का पाणी पीने के लिए नही मिलता है । वैसे ही कर्मी मनुष्य को साधू संगत का योग नही मिलता है । जैसे अंगूर वैशाख महीने मे फलता है उस समय कौए के मुँख मे रोग हो जाता है जिससे वह अंगूर खा नही पाता है वैसे ही साधू की संगती मे,कर्महीन मनुष्य के आडे कोई न कोई विघ्न आ जाता जिससे उसका साधू का संगत का योग नही जुडता है ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।।२।।

**ज्हाँ आन की सेव ।। साध की संगत न भावे ।।**
**जेसे जुर को जोर ।। रूच अन की मिट जावे ।।**
**कृमी तजे कपूर ।। मेल माखि नित जोई ।।**
**ब्होता दूधाँ धोय ।। कोयला ऊजळ न होई ।।**
**सदा सजीवण जीव कूं ।। सुन पाती अन सूँ मरे ।।**
**युँ क्रम ऊदो सुखरामजी ।। ब्रम्ह भक्त केसें करे ।। ३ ।।**

जहाँ जिसके घर मे अन्य देवताओ की भक्ती होती है उसको साधू संगती अच्छी नही लगती है । जैसे किसी को बुखार रहा तो उस बुखारके जोर से अन्न की रूची मिट जाती है अन्न मीठा नही लगता और अन्न से दुर्गन्ध उसे मालुम पडती है । वैसे ही जिसे कर्म रूपी बुखार है । उसे अन्नरूपी संत की संगती अच्छी नही लगती है । कृमी(कीडे)कपूर का त्याग करते है । वैसे ही कर्मी मनुष्य साधू संत का त्याग करते है और ये मक्खियाँ हमेशा मैली गन्दी जगह पर आकर बैठती है इसी तरह से कर्मी मनुष्य हमेशा बुरे लोगो का संग करना चाहते है । कोयला को दूध से कितना भी धोये तो भी वह कोयला सफेद नही होगा ऐसे ही कर्मी मनुष्य को कितना भी ज्ञान बताया तो भी उसका कोयला के जैसा कालापन नही जाता है । अन्न हमेशा सभी जीवो का संजीवन है परन्तु यही अन्न,सन्निपात(एक प्रकार का ज्वर)हुए मनुष्यको देने पर वह मनुष्य मर जाता है ऐसे ही जिसके पहले के नरकीय कर्म उदित हो गये है ऐसा कर्मी मनुष्य सतस्वरुप ब्रम्ह भक्ती कैसे करेगा ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले। ।।३।।

ऊदे भाण प्रकास ।। जीव अेता नही राजी ।।
गुघू तस्कर चोर ।। चमक प्र भयँग बेराजी ।।
दीयो मान मुसाल ।। जोत हीरा की जावे ।।
यूँ पतवृता कूं देख ।। बेसीया ब्हो दु:ख पावे ।।
यूँ हरजन मंड प्रगटयाँ ।। क्रमी नर मुर्झाय ।।
ग्यान चक्र सुखराम क्हे ।। लगे कन फटी माय ।। ४ ।।

सुरज के उगने पर जीव खुश होते है परन्तु उल्लू ,तस्कर (चोर) ,चमक (पाकोडी) ,पर (चमगादड),भुजंग(सर्प)ये नाराज होते है । दीपक,मशाल,हीरे की ज्योती सुर्य प्रकाश से नही के जैसे हो जाती है,पतिव्रता को देखकर वेश्या को दु:ख होता है इसी प्रकार से इस पृथ्वीपर हरीजन को प्रगट हुआ देखकर कर्मी मनुष्य मुरझा जाता है । हरीजन के ज्ञान का चक्र कर्मी मनुष्य की कनपटी मे लगता है ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। ४ ।।

।। इति क्रमी नर को अंग संपूरण ।।